अध्याय 3 — शक्ति या रहस्य?

रात्रि के लगभग ग्यारह बज चुके थे।

पूरा शहर धीरे-धीरे शांत हो रहा था, लेकिन आरव की आँखों में नींद नहीं थी।

वह अपने बिस्तर पर लेटा छत की ओर देख रहा था। उसके मन में बार-बार एक ही प्रश्न उठ रहा था।

आखिर उसके पास यह शक्ति आई कहाँ से?

वह उठकर खिड़की के पास गया। सामने एक विशाल भवन पर शक्तियों के रिफिल का डिजिटल विज्ञापन चमक रहा था।

उसे देखकर आरव सोचने लगा—

“जब सभी लोगों को अपनी शक्तियाँ बनाए रखने के लिए पैसे खर्च करने पड़ते हैं, तो मुझे ऐसा क्यों नहीं करना पड़ता?”

“क्या मेरी शक्ति भी किसी दिन समाप्त हो जाएगी?”

उसने अपनी आँखें बंद कीं और अगले ही क्षण वह घर की छत पर खड़ा था।

कुछ क्षण बाद वह वापस अपने कमरे में पहुँच गया।

उसने ऐसा कई बार किया। कभी छत पर, कभी कमरे में, तो कभी घर के पीछे खाली मैदान में।

लेकिन उसकी शक्ति में कोई कमी नहीं आई।

उसे थकान तक अनुभव नहीं हुई।

प्रत्येक सफल प्रयास के साथ उसकी प्रसन्नता बढ़ने के स्थान पर उसकी चिंता बढ़ रही थी।

“क्या इस पूरे संसार में केवल मैं ही ऐसा हूँ?”

वह वापस अपने बिस्तर पर बैठ गया।

अनजानी खोज

आरव ने अपना लैपटॉप खोला और इंटरनेट पर शक्तियों के विषय में जानकारी खोजने लगा।

उसने पढ़ा कि अलग-अलग शक्तियों की ऊर्जा क्षमता अलग-अलग होती है। महँगी शक्तियों के साथ अधिक ऊर्जा क्षमता खरीदी जा सकती है, जबकि कम ऊर्जा क्षमता वाली शक्तियों को जल्दी रिफिल करवाना पड़ता है।

पूरे संसार में केवल एक ही कंपनी थी, जो इन शक्तियों का निर्माण और वितरण करती थी।

उसकी शाखाएँ संसार के अनेक देशों में थीं।

शक्तियों की कीमत, उनकी ऊर्जा क्षमता और रिफिल की कीमत भी वही कंपनी निर्धारित करती थी।

लेकिन कंपनी इन शक्तियों का निर्माण कैसे करती थी, इसकी कोई सार्वजनिक जानकारी उपलब्ध नहीं थी।

आरव कुछ देर सोचता रहा।

“इतनी बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धि का अधिकार केवल एक कंपनी के पास कैसे है?”

“और यदि संसार की सारी शक्तियाँ इसी कंपनी में बनती हैं, तो मेरी शक्ति कहाँ से आई?”

आरव ने एक नया प्रश्न खोजा—

“क्या किसी मनुष्य के पास जन्म से कोई असाधारण शक्ति हो सकती है?”

उसे अनेक काल्पनिक कहानियाँ और अप्रमाणित दावे मिले, लेकिन कोई विश्वसनीय उत्तर नहीं मिला।

उसने कंपनी द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली शक्तियों की सूची देखी। परंतु उसे अपनी शक्ति जैसी कोई क्षमता उस सूची में दिखाई नहीं दी।

वह कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गया।

“यदि मेरे विषय में किसी को पता चल गया तो क्या होगा?”

वह कल्पना करने लगा।

जिन शक्तियों के लिए लोग लाखों रुपये खर्च करते हैं, यदि उनसे भी अलग कोई शक्ति एक साधारण मनुष्य के पास बिना किसी खर्च के हो, तो क्या वे उसे सामान्य जीवन जीने देंगे?

क्या वे उससे उसकी शक्ति छीनने का प्रयास करेंगे?

क्या वैज्ञानिक उसके शरीर पर परीक्षण करेंगे?

और यदि उस कंपनी को उसके विषय में पता चला तो?

उसने तुरंत अपना लैपटॉप बंद कर दिया।

आज पहली बार उसे अपनी शक्ति से भय लग रहा था।

माता-पिता की स्मृतियाँ

आरव ने अपनी अलमारी खोली।

वहाँ एक पुरानी तस्वीर रखी थी, जिसमें उसके माता-पिता एक छोटे बच्चे को गोद में लिए मुस्कुरा रहे थे।

वह बच्चा स्वयं आरव था।

उसने तस्वीर उठाई और कुछ देर तक उसे देखता रहा।

“आप दोनों कौन थे?”

“क्या आपके पास भी कोई शक्ति थी?”

आरव के पास अपने माता-पिता के नाम और कुछ तस्वीरों के अतिरिक्त उनके जीवन से जुड़ी बहुत कम जानकारी थी।

जब भी उसने उनके विषय में जानना चाहा, दादाजी ने यही बताया कि एक कार दुर्घटना में दोनों की मृत्यु हो गई थी।

बचपन में वह इस उत्तर से संतुष्ट हो जाता था। लेकिन अब वह बड़ा हो चुका था।

अब उसके प्रश्न भी बड़े हो चुके थे।

उसे अपने पिता की आवाज तक याद नहीं थी। वह नहीं जानता था कि उसकी माँ उसे किस नाम से पुकारती थीं।

वह नहीं जानता था कि उसके पिता को क्या पसंद था, उसकी माँ किस बात पर हँसती थीं या दोनों ने अपने भविष्य के लिए क्या सपने देखे थे।

जब वह दूसरे बच्चों को उनके माता-पिता के साथ देखता था, तो कभी-कभी उसके मन में भी इच्छा होती थी कि कोई उसके सिर पर माँ की तरह हाथ रखे। कोई पिता की तरह उसकी छोटी-छोटी सफलताओं पर गर्व करे।

दादाजी ने उसे कभी किसी वस्तु की कमी अनुभव नहीं होने दी थी।

उन्होंने ही उसका पालन-पोषण किया था। उसके बीमार होने पर रातभर जागते थे। उसकी प्रसन्नता में प्रसन्न होते और उसकी पीड़ा में स्वयं दुखी हो जाते थे।

आरव उनसे बहुत प्रेम करता था।

लेकिन माता-पिता का स्थान उसके हृदय में आज भी रिक्त था।

उसके पास उनकी तस्वीरें थीं, लेकिन स्मृतियाँ नहीं थीं।

उसने तस्वीर को अपने सीने से लगा लिया।

“काश, मैं आप दोनों से एक बार मिल पाता।”

दादाजी से संवाद

अगली सुबह दादाजी नाश्ता बना रहे थे।

आरव उनके पास जाकर बैठ गया।

“दादाजी, एक बात पूछूँ?”

“पूछो बेटा।”

“मेरे पिताजी कैसे थे?”

दादाजी मुस्कुराए।

“बहुत सीधे और सरल स्वभाव के थे।”

“और माँ?”

“बहुत साहसी थीं। अपनी बात स्पष्ट रूप से कहती थीं।”

आरव मुस्कुराया।

“तो दोनों का स्वभाव बिल्कुल अलग था?”

“हाँ, बहुत अलग।”

“फिर दोनों एक-दूसरे से प्रेम कैसे करने लगे?”

दादाजी हँस पड़े।

“प्रेम करने के लिए दो मनुष्यों का एक जैसा होना आवश्यक नहीं है।”

“तो क्या माँ, पिताजी से बहुत लड़ती थीं?”

दादाजी हँसते हुए बोले—

“कभी-कभी।”

“और पिताजी?”

“वह अधिकतर शांत ही रहते थे।”

“तो फिर माँ की ही चलती होगी!”

आरव और दादाजी दोनों हँसने लगे।

आरव के चेहरे पर प्रसन्नता दिखाई देने लगी।

आज बहुत समय बाद दादाजी उसके माता-पिता के विषय में बात कर रहे थे।

उसने उत्सुकता से पूछा—

“दोनों की पहली मुलाकात कहाँ हुई थी?”

दादाजी के हाथ रुक गए।

उन्होंने कुछ क्षण विचार किया और फिर कहा—

“नाश्ता ठंडा हो रहा है, पहले खा लो।”

आरव समझ गया कि दादाजी फिर विषय बदल रहे हैं।

“दादाजी, आप ऐसा हमेशा क्यों करते हैं?”

“क्या करता हूँ?”

“जब भी मैं अपने माता-पिता के विषय में अधिक जानना चाहता हूँ, आप बात बदल देते हैं।”

दादाजी मौन रहे।

आरव ने फिर पूछा—

“वे कहाँ रहते थे? क्या काम करते थे? उनके मित्र कौन थे? क्या उनके किसी मित्र से आज भी आपका संपर्क है?”

दादाजी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

“दादाजी, मुझे उनके विषय में केवल इतना ही क्यों पता है कि उनकी मृत्यु एक कार दुर्घटना में हुई थी?”

“क्या उनके जीवन में कुछ ऐसा था, जो मुझे नहीं पता होना चाहिए?”

“ऐसी कोई बात नहीं है, बेटा।”

“तो फिर मुझे क्यों नहीं बताते?”

दादाजी ने उसकी ओर देखा।

“कुछ स्मृतियाँ मनुष्य को बहुत पीड़ा देती हैं।”

आरव की आँखें नम हो गईं।

“लेकिन दादाजी, आपके पास तो उनकी स्मृतियाँ हैं। मेरे पास तो वे भी नहीं हैं।”

दादाजी के पास इस प्रश्न का कोई सरल उत्तर नहीं था।

आरव ने आगे कहा—

“मैं उनकी मृत्यु के विषय में नहीं, उनके जीवन के विषय में जानना चाहता हूँ।”

“मैं जानना चाहता हूँ कि मैं किनका बेटा हूँ। मेरे भीतर उनकी कौन-सी आदतें हैं। क्या मैं अपने पिताजी जैसा दिखता हूँ या अपनी माँ जैसा?”

“क्या मेरा स्वभाव भी उनमें से किसी एक जैसा है?”

दादाजी ने आरव का हाथ पकड़ लिया।

“तुम्हारे भीतर उन दोनों के बहुत से गुण हैं, बेटा।”

आरव कुछ क्षण उनकी ओर देखता रहा।

लेकिन उसके मन को अभी भी संतोष नहीं मिला था।

एक असामान्य प्रश्न

कुछ देर की चुप्पी के बाद आरव ने पूछा—

“दादाजी, क्या मेरे माता-पिता ने कभी कोई शक्ति खरीदी थी?”

दादाजी ने तुरंत आरव की ओर देखा।

“तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो?”

“आजकल बहुत लोगों के पास शक्तियाँ हैं। इसलिए सोचा कि शायद उनके पास भी रही होंगी।”

“शक्तियों में तुम्हारी रुचि कब से बढ़ गई?”

आरव थोड़ा असहज हो गया।

“बस ऐसे ही पूछ रहा हूँ।”

दादाजी ने उसकी आँखों में देखा।

“आरव, क्या कोई ऐसी बात है, जो तुम मुझे बताना चाहते हो?”

एक क्षण के लिए आरव का मन हुआ कि वह दादाजी को सब कुछ बता दे।

वह उन्हें बताना चाहता था कि किस प्रकार वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाता है। किस प्रकार उसकी शक्ति की ऊर्जा कभी समाप्त नहीं होती।

लेकिन वह स्वयं अपनी शक्ति को नहीं समझ पाया था।

वह नहीं चाहता था कि दादाजी भी उसके कारण चिंतित हों।

“नहीं दादाजी, ऐसी कोई बात नहीं है।”

दादाजी ने आगे कुछ नहीं पूछा।

लेकिन दोनों के बीच एक विचित्र मौन उत्पन्न हो गया।

दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते थे।

दोनों एक-दूसरे की चिंता करते थे।

और दोनों ही एक-दूसरे से कुछ छिपा रहे थे।

व्यापार का दूसरा पक्ष

उस दिन कॉलेज जाते समय आरव कंपनी के एक शक्ति विक्रय केंद्र के सामने रुक गया।

वहाँ अनेक धनवान लोग उपस्थित थे।

कुछ नई शक्तियाँ खरीदने आए थे, तो कुछ अपनी पुरानी शक्तियों का रिफिल करवाने।

तभी एक व्यक्ति कर्मचारी से विवाद करने लगा।

“मैंने इतनी महँगी शक्ति खरीदी थी। इसकी ऊर्जा इतनी जल्दी कैसे समाप्त हो गई?”

कर्मचारी ने उत्तर दिया—

“आपने निर्धारित क्षमता से अधिक इसका प्रयोग किया है। आपको अतिरिक्त रिफिल खरीदना होगा।”

“लेकिन पिछले सप्ताह ही तो रिफिल करवाया था!”

“महाशय, यदि आप अधिक समय तक अपनी शक्ति का प्रयोग करना चाहते हैं, तो आपको अधिक ऊर्जा क्षमता खरीदनी होगी।”

वह व्यक्ति क्रोधित था।

लेकिन उसके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था।

वह कहीं और से अपनी शक्ति का रिफिल भी नहीं करवा सकता था। संसार में यह सुविधा केवल उसी कंपनी के पास थी।

अंततः उसने भुगतान कर दिया।

आरव दूर खड़ा सब सुन रहा था।

वह सोचने लगा कि यदि उसकी शक्ति भी इसी प्रकार समाप्त होती, तो वह कितनी बार रिफिल खरीद पाता?

शायद एक बार भी नहीं।

उसके पास इतने पैसे नहीं थे।

लेकिन उसके पास जो था, उसे खरीदने की आवश्यकता ही नहीं थी।

उसने पिछली रात अपनी शक्ति का अनेक बार प्रयोग किया था। फिर भी उसे किसी प्रकार की ऊर्जा की कमी अनुभव नहीं हुई थी।

“क्या मेरी शक्ति वास्तव में इन लोगों की शक्तियों से अलग है?”

“क्या इसकी भी कोई सीमा है, जिसे मैं अभी तक नहीं जान पाया हूँ?”

“यदि इसकी कोई सीमा ही नहीं हुई तो?”

इस विचार ने उसे प्रसन्न करने के स्थान पर और अधिक चिंतित कर दिया।

कुछ देर वहाँ खड़े रहने के बाद वह कॉलेज की ओर बढ़ गया।

दादाजी का अकेलापन

उधर घर में दादाजी अकेले बैठे थे।

आज आरव के प्रश्नों ने उन्हें भीतर तक विचलित कर दिया था।

वह बार-बार अपने माता-पिता के विषय में जानना चाहता था।

दादाजी जानते थे कि अब उसके प्रश्नों को टालना पहले जितना सरल नहीं होगा।

उन्होंने आँखें बंद कीं और कुछ देर शांत बैठे रहे।

उनकी आँखों में नमी थी।

फिर उनके मुख से धीरे से निकला—

“कुछ उत्तर तुम्हें स्वयं खोजने होंगे, आरव।”